HOME संस्कृत शिक्षण पाठशाला » DOWNLOADS » लघुसिद्धान्तकौमुदी » साहित्यम् » दर्शनम् » स्तोत्रम्/गीतम् » कर्मकाण्डम् » विविध »

Home » कर्मकाण्ड » देव पूजा विधि Part-8 शालग्राम-पूजन

Search

Popular Tags Blog Archives

देव पूजा विधि Part-8 शालग्राम-पूजन

जगदानन्द झा 1:09 am कोई टिप्पणी नहीं

शालग्राम तथा प्रतिष्ठित मूर्तियों में आवाहन न करें, केवल पुष्प छोड़े।

आवाहन- ॐ सहश्रशीर्षा01 आवाहयामि

आसन- ॐ पुरुषऽ एवेद Ù0 आसनं समर्पयामि

पाद्य- ॐ एतावानस्य0 पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य- ॐ त्रिपादूध्व0 अघ्र्यं समर्पयामि।

आचमन- ॐ ततो विराडजायत0 आचमनं समर्पयामि।

स्नान- ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः0 स्नानं समर्पयामि। (दुग्ध, दधि, घृत, मधु और शर्करास्नान के बाद शुद्धोदकस्नान कराएँ।)

दूध स्नान-ॐ पयः पृथिव्यां पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। दुग्धस्नानं समर्पयामि।

दही स्नान-ॐ दधिक्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽ आयू Ù षि तारिषत्।। दधिस्नानं समर्पयामि।

घृत स्नान-ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। घृतस्नानं समर्पयामि।

मधु स्नान-ॐ मधुवाताऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव Ù रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ2 अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करा स्नान-ॐ अपा Ù रसमुद्वयस Ù सूर्ये सन्त समाहितम्। अपा Ù रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तमपुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। शर्करास्नानं स.।

पञ्चामृत स्नान- ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सश्रोतसः। सरस्वती तु पञ्धा सो देशेऽभवत्सरित्।। पञ्चामृतस्ना. सम.।

शुद्धोदक स्नान-ॐ कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती।

गङ्गा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्।।

गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम्।। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र-ॐ तस्माद्यज्ञात्0 वस्त्रोपवस्त्रं ा समर्पयामि।

यज्ञोपवीत- ॐ तस्मादश्वा0 यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मधुपर्क-ॐ दधि मध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्म-समन्वितम्।

मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदो भव शोभन।। मधुपर्कं स0,

आचमनीयं जलं समर्पयामि

लोकप्रिय पोस्ट

देव पूजा विधि Part-1 स्वस्तिवाचन, गणेश पूजन

इस प्रकरण में पञ्चाङ्ग पूजा विधि दी गई है। प्रायः प्रत्येक संस्कार , व्रतोद्यापन , हवन आदि यज्ञ यज्ञादि में पञ्चाङ्ग पूजन क...

संस्कृत कैसे सीखें

इस ब्लॉग में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश एवं अन्य विविध देवी देवताओं के स्तोत्रों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। संस्क...

तर्पण विधि

प्रातःकाल पूर्व दिशा की और मुँह कर बायें और दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री (पैंती) धारण करें। यज्ञोपवीत को सव्य कर लें। त...

लघुसिद्धान्तकौमुदी (अच्सन्धि-प्रकरणम्)

अथ अच्सन्धिः If you cannot see the audio controls, your browser does not suppo...

गन्ध-ॐ तं यज्ञं0 गन्धं समर्पयामि।
अक्षत- (श्वेत तिल चढ़ाएं चावल नहीं) ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ
अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती यो जान्विन्द्र ते हरी।। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्प-ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ॅ सुरे स्वाहा।। पुष्पं समर्पयामि।
पुष्पमाला-ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽ इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
पुष्पमाल्यां समर्पयामि।
तुलसीपत्रा-ॐ यत्पुरुषं0 तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्।।
ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा।। तुलसीपत्रां समर्पयामि।
दूर्वा-विष्ण्वादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा।
क्षीरसागरसम्भूते ! वंशवृद्धिकरी भव।। दूर्वां समर्पयामि।
शमीपत्रा-शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी। शमीपत्रां समर्पयामि।
आभूषण-रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः।। आभूषणानि समर्पयामि। अबीर और गुलाल-नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीर नामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।। अबीरं समर्पयामि।
सुगन्धतैल-तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर।। सुगन्धतैलं समर्पयामि।
धूप-ॐ ब्राह्मणोऽस्य0 ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितम ॅ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।। धूपमाघ्रापयामि।
दीप-ॐ चन्द्रमा0 दीपं दर्शयामि।
नैवेद्य-तुलसीदल डालकर आगे लिखी पाँच ग्रास-मुद्राएँ दिखाएँ।
प्राणाय स्वाहा-कनिष्ठा, अनामिका और अंगूठा मिलाएँ।
अपानाय स्वाहा- अनामिका, मध्यमा और अंगूठा मिलाएँ।
व्यानाय स्वाहा-मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलाएँ।
उदानाय स्वाहा-तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलाएँ।
समानाय स्वाहा-सभी अंगुलियां अंगूठे से मिलाएँ।
ॐ नाभ्या0 नैवेद्यं निवेदयामि।
पानीयजल एलोशीरलवङ्गादि कर्पूरपरिवासितम्।
प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर।। मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि।
ऋतुफल-बीजपूराम्र- मनस-खर्जुरी-कदली-फलम्।
नारिकेल फलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर।। ऋतुफलं समर्पयामि।
आचमन-कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम्।
आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः।। आचमनीयं जलं समर्पयामि।
नारियल-फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।। अखण्डं ऋतुफलं सम0।
ताम्बूल-पूगीफल-ॐ यत्पुरुषेण0 ताम्बूलं समर्पयामि। दक्षिणा-पूजाफलसमृद्धार्थं दक्षिणा च तवाग्रतः।
स्थापिता तेन मे प्रीतः पूर्णान् कुरु मनोरथान्।। दक्षिणां समर्पयामि।
आरती- कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव।।
पुष्पांजलि
ॐ यज्ञेन यज्ञ0 ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।। ॐ विश्तश्चक्षुरुत विश्तोमुखो विश्तोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैद्यावाभूमी जनयन् देवऽ एकः।। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नारायणाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।।
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽत्मना वाऽनुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्।। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।
प्रदक्षिणा- ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषां ॅ सहश्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।
क्षमा-प्रार्थना- मन्त्राहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन!।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर!।।

ब्लॉग की सामग्री यहाँ खोजें।

खोज

लेखानुक्रमणी

विसर्जन- यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च।
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठाः! स्वस्थानं परमेश्वराः!।।

यजमान-आशीर्वाद-मन्त्रा-अक्षतान् विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः।
चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्यशो बलम्।।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव।।
ॐ श्रीर्वचस्वमायुमायुष्यमारोग्रमाविधात्
पवमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं
शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः।।।। इति।।

जगदानन्द झा
लखनऊ में प्रशासनिक अधिकारी के पदभार ग्रहण से पूर्व सामयिक विषयों पर कविता,निबन्ध लेखन करता रहा। संस्कृत के सामाजिक सरोकार से जुडा रहा। संस्कृत विद्या में महती अभिरुचि के कारण अबतक चार ग्रन्थों का सम्पादन। संस्कृत को अन्तर्जाल के माध्यम से प्रत्येक लाभार्थी तक पहुँचाने की जिद। संस्कृत के प्रसार एवं विकास के लिए ब्लॉग तक चला आया। मेरे अपने प्रिय शताधिक वैचारिक निबन्ध, हिन्दी कविताएँ, 21 हजार से अधिक संस्कृत पुस्तकें, 100 से अधिक संस्कृतज्ञ विद्वानों की जीवनी, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों की परिचर्चा, शिक्षण- प्रशिक्षण और भी बहुत कुछ मुझे एक दूसरी ही दुनिया में खींच ले जाते है। संस्कृत की वर्तमान समस्या एवं वृहत्तम साहित्य को अपने अन्दर महसूस कर अपने आप को अभिव्यक्त करने की इच्छा बलवती हो जाती है। मुझे इस क्षेत्र में कार्य करने एवं संस्कृत विद्या अध्ययन को उत्सुक समुदाय को नेतृत्व प्रदान करने में अत्यन्त सुखद आनन्द का अनुभव होता है।

← नई पोस्ट मुख्यपृष्ठ पुरानी पोस्ट →

कोई टिप्पणी नहीं:

एक टिप्पणी भेजें

अपनी टिप्पणी लिखें...

इस रूप में टिप्पणी करें: Vasudev Shastri ((साइन आउट करें

डालें पूर्वावलोकन मुझे सूचित करें

RECENT POSTS

अव्यवस्थित सूची

लेखाभिज्ञानम्

बार जानकारी के अभाव में लोग गलत सामग्री पर भरोसा कर लेते हैं। ई-सामग्री के महासमुद्र में इच्छित व प्रामाणिक सामग्री को खोजना भी एक जटिल कार्य है।
इन परिस्थितियों में मैं आपके साथ हूँ। आपको मैं प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध कराने के साथ आपकी कठिनाईयों को दूर करने के लिए वचनबद्ध हूँ। प्रत्येक लेख के अंत में **मुझे सूचित करें** बटन दिया गया है। यहाँ पर क्लिक करना नहीं भूलें।